

KHATRA ADIBASI MAHAVIDYALAYA

E CONTENT

DEPARTMENT: MUSIC

SEMESTER: I(GE-1)

SESSION: 2022-2023

SUBJECT: HISTORY OF INDIAN MUSIC

(AHMUS/103/GE-1)

TOPIC- TIME THEORY OF RAGA

NAME OF TEACHER: PROF. SANGITA SARKAR DEY

। रागेर समय चक्र ।। (TIME THEORY OF RAGA)

राग परिवेशनेर समय साधारणत दुई प्रकारे निर्धारित हईयाछे। येमन- रागे ब्यवहत स्वर अनुसारे ओ रागेर वादी स्वर अनुसारे।

रागे ब्यवहत स्वर अनुसारे राग परिवेशनेर समय (TIME OF SERVE RAGA ACCORDING SWAR USED IN THE RAGA): स्वरसप्तके शुद्ध ओ विकृत मिलिया मोट वारटि स्वर थाके। केवल शुद्ध स्वर द्वारा राग गठित हईते पारे, आवार शुद्ध ओ विकृत स्वरर संमिश्रणेओ राग गठित हईते पारे। एई शुद्ध ओ विकृत स्वरर समन्वये गठित हिन्दुस्तानी सङ्गीतेर रागगुलिके प्रधानत तिनटि भागे भाग करा हईयाछे।

येमन:-

[१] रेध कोमल ओ ग शुद्धयुक्त राग: ब्यतिक्रम हिसाबे ध शुद्ध থাকितेपारे। परिवेशनेर समय सकाल एबं सन्ध्या ४टा हईते ९टा पर्यन्त।

[२] शुद्ध रे ध युक्त राग: ग-ओ शुद्ध থাকिबे। परिवेशनेर समय दिवा ओ

रात्रि ९टा हईते १०टा वा १२टा पर्यन्त। [३] कोमल गनि युक्त राग: परिवेशनेर समय दिवा ओ रात्रि १०टा वा १२टा हईते ४टा पर्यन्त। एखाने भोर ४टा हईते परदिन भोर ४टा पर्यन्त समयके सम्पूर्ण दिन धरा हईयाछे।

दिवाभागे (IN THE DAY TIME)

[क] भोर ४टा हईते बेला ९टा पर्यन्त परिवेशन करिते हईबे कोमल रे ओ शुद्ध ग युक्त राग। ब्यतिक्रम हिसाबे ध शुद्ध থাকिते पारे। एई समये रागगुलिके प्रातःकालीन सङ्किप्रकाश राग बला हय।

येमन: भैरव ठाट हईते-

भैरव, रामकेली, कालिङगड़ा प्रभृति। पूर्वी ठाट हईते परज, वसन्त प्रभृति। मारवाठाट हईते-ललित, सोहिनी प्रभृति।

[ख] बेला ९टा हईते बेला १०टा पर्यन्त परिवेशन करिते हईबे शुद्ध रे ध युक्त राग। इहाते ग-ओ शुद्ध থাকिबे। येमन:- विलावल ठाट हईते विलावल, आलाहिया, देशकार प्रभृति। कल्याण ठाट हईते- गौड़सारङ्ग, हिन्दोल प्रभृति। खाम्बाज ठाट हईते-गरा इत्यादि।

[গ] বেলা ১০টা না ১২টা হইতে বৈকাল ৪টা পর্যন্ত পরিবেশন করিতে হইবে কোমল নিযুক্ত রাগ। যেমন: কাফী ঠাট হইতে-ভীমপলশ্রী, বৃন্দাবনী সারং পিলু প্রভৃতি। আশাবরী ঠাট হইতে-আশাবরী, জৌনপুরী, দেশী প্রভৃতি। ভৈরবী ঠাট হইতে-ভৈরবী, বিলাসখানী টোড়ী প্রভৃতি।

-রাত্রিভাগে-(AT NIGHT)

[ক] বৈকাল ৪টা হইতে সন্ধ্যা ৭টা পর্যন্ত পরিবেশন করিতে হইবে কোমল রে ও শুদ্ধগ যুক্ত রাগ। ব্যতিক্রম হিসাবে য শুদ্ধ থাকিতে পারে। এই সময়ে গীত রাগগুলিকে সায়ংকালীন সন্ধিপ্রকাশ রাগ বলা হয়। যেমন: ভৈরব ঠাট হইতে গৌরী। পুরী ঠাট হইতে পূর্বী, স্ত্রী, পুরিয়াধানেত্রী প্রভৃতি। মারবা ঠাট হইতে মারবা, পুরিয়া প্রভৃতি।

[খ] সন্ধ্যা ৭টা হইতে ১০টা বা ১২টা পর্যন্ত পরিবেশন করিতে হইবে শুদ্ধ রে ধ যুক্ত রাগ। ইহাতে গ-ও শুদ্ধ থাকিবে। যেমন:- বিলাবল ঠাট হইতে-দুর্গা। কল্যাণ ঠাট হইতে- ইমন, কেদার, কামোদ প্রভৃতি। খাম্বাজ ঠাট হইতে-খাম্বাজ, তিলককামোদ, জয়জয়ন্তী প্রভৃতি।

[গ] রাত্রি ১০টা বা ১২টা হইতে ভোর ৪টা পর্যন্ত পরিবেশন করিতে হইবে কোমল গ্র নিযুক্ত রাগ। যেমন: কাফী ঠাট হইতেকাফী, বাগেশ্রী, বাহার প্রভৃতি। আশাবরী ঠাট হইতে আড়ানা, দরবাড়ী কানাড়া প্রভৃতি। ভৈরবী ঠাট হইতে- মালকোষ ইত্যাদি।

বাদী স্বর অনুসারে রাগ পরিবেশনের সময়: প্রথমে স্বর সপ্তকে দুইভাগে ভাগ করিতে হইবে। যেমন- সারে গম ও পধনি সাঁ। এই ভাগের প্রথম ভাগকে বলা হয় সপ্তকের পূর্বাঙ্গ ও দ্বিতীয় ভাগকে বলা হয়। সপ্তকের উত্তরাঙ্গ। পরবর্তীকালে এই সপ্তক ভাগকে একটু পরিবর্তন করিয়া লওয়া হইয়াছে। অনেক সময় দেখা যায়, কোন রাগের বাদী স্বর ম হইলেও উহা উত্তরাঙ্গবাদী রাগ আবার কোন রাগের বাদী স্বর প হইলেও উহা পূর্বাঙ্গবাদী রাগ। সেই কারণে প্রথম ভাগ সা রে গ ম প এবং দ্বিতীয় ভাগ ম পধনি সাঁ এইভাবে ভাগ করা হইয়াছে।

এইবার দিবারাত্রির ২৪ ঘণ্টাকে সমান দুইভাগে ভাগ করিতে হইবে। যেমন প্রথম ভাগ দিবা ১২টা হইতে রাত্রি ১২টা পর্যন্ত এবং দ্বিতীয় ভাগ রাত্রি ১২টা হইতে পরদিন বেলা ১২টা পর্যন্ত। ইহাদের প্রথম ভাগকে বলা হয় সময়ের পূর্বাঙ্গ ও দ্বিতীয় ভাগকে বলা হয় সময়ের উত্তরাঙ্গ।

যদি কোন রাগের বাদী স্বর সপ্তকের পূর্বাঙ্গে অর্থাৎ সা রে গ ম প এই স্বরগুলির মধ্যে থাকে, তবে তাহাকে পরিবেশন করিতে হইবে সময়ের পূর্বাঙ্গে অর্থাৎ দিবা ১২টা হইতে রাত্রি ১২টার মধ্যে এবং যদি কোন রাগের বাদী স্বর সপ্তকের উত্তরাঙ্গে অর্থাৎ ম প ধনি সা এই স্বরগুলির মধ্যে থাকে, তবে তাহাকে পরিবেশন করিতে হইবে সময়ের উত্তরাঙ্গে অর্থাৎ রাত্রি ১২টা হইতে পরদিন বেলা ১২টার মধ্যে।